



॥ श्री अन्नपूर्णा व्रत कथा ॥
॥ ॐ अन्नपूर्णायै नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री अन्नपूर्णा व्रत कथा ॥

मंगलाचरण

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ अन्नपूर्णायै नमः।

एक समय की बात है। काशी नगरी में भगवान शिव और माता पार्वती निवास करते थे। एक दिन भगवान शिव ने कहा— "यह संसार मिथ्या है, शरीर भी नश्वर है और अन्न का कोई विशेष महत्त्व नहीं है।" भगवान शिव के इन वचनों को सुनकर माता पार्वती ने विचार किया कि यदि अन्न का कोई महत्त्व नहीं है, तो संसार को इसका अनुभव होना चाहिए। माता ने अपनी योगमाया से समस्त पृथ्वी से अन्न, फल, धान्य और भोजन को अदृश्य कर दिया। देखते ही देखते पृथ्वी पर भयंकर अकाल पड़ गया। खेत सूख गए, नदियाँ सूखने लगीं, पशु-पक्षी व्याकुल हो गए और मनुष्य भूख से पीड़ित होकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। देवताओं ने ब्रह्माजी और भगवान विष्णु से सहायता की प्रार्थना की। तब सभी देवता भगवान शिव के पास पहुँचे और बोले— "प्रभो! सम्पूर्ण संसार

अन्न के अभाव में दुःखी हो गया है।"

भगवान शिव ने ध्यान लगाया और समझ गए कि यह सब माता पार्वती की लीला है। वे माता को खोजते हुए काशी पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि माता पार्वती अन्नपूर्णा देवी के दिव्य स्वरूप में स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान हैं। उनके एक हाथ में अन्न से भरा स्वर्ण पात्र और दूसरे हाथ में स्वर्ण करछुल (परोसने का पात्र) है। माता स्वयं भूखों को प्रेमपूर्वक भोजन करा रही हैं। उनके मुखमण्डल से करुणा और मातृत्व की दिव्य आभा प्रकट हो रही थी। भगवान शिव माता के समीप गए और विनम्र भाव से बोले— "हे जगदम्बे! अब मुझे ज्ञात हो गया कि अन्न ही जीवन का आधार है। शरीर, धर्म, तप, यज्ञ, ज्ञान और भक्ति—इन सभी का आधार अन्न ही है। कृपा करके संसार का कल्याण करें।"

माता अन्नपूर्णा मुस्कुराईं और अपने करकमलों से भगवान शिव को भिक्षा स्वरूप अन्न प्रदान किया। उसी क्षण सम्पूर्ण पृथ्वी पर पुनः अन्न, फल, धान्य और समृद्धि की वर्षा होने लगी। खेत हरे-भरे हो गए, पशु-पक्षी प्रसन्न हो गए और सभी प्राणियों का जीवन फिर से आनंदमय हो गया।

तब माता ने कहा— "जो मनुष्य अन्न का सम्मान करेगा, कभी भोजन का अपमान नहीं करेगा, भूखे को भोजन कराएगा और श्रद्धा से मेरी पूजा एवं व्रत करेगा, उसके घर में कभी अन्न की कमी नहीं होगी। वहाँ धन, धान्य, सुख, शांति और समृद्धि का सदैव वास रहेगा।"

उसी समय से माता पार्वती अन्नपूर्णा देवी के नाम से संसार में पूजित हुईं। काशी को उनकी विशेष नगरी माना गया और भगवान शिव ने स्वयं माता की महिमा का गुणगान किया।

व्रत का महत्व

जो स्त्री या पुरुष श्रद्धा और विश्वास से श्री अन्नपूर्णा का व्रत रखता है, पूजा करता है, यह कथा सुनता या पढ़ता है तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार अन्नदान करता है, उसके जीवन से दरिद्रता दूर होती है। परिवार में सुख, शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि बनी रहती है। माता की कृपा से घर के अन्न-भंडार सदैव भरे रहते हैं और किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता।

व्रत का संदेश

अन्न को भगवान का प्रसाद समझकर ग्रहण करें।

भोजन का कभी अनादर या अपव्यय न करें।

अपनी सामर्थ्य के अनुसार अन्नदान अवश्य करें।

भूखे, निर्धन और जरूरतमंद लोगों को भोजन कराना माता अन्नपूर्णा की सर्वोत्तम सेवा है।

जीवन में विनम्रता, सेवा और कृतज्ञता का भाव रखें।

कथा का फलश्रुति

जो भक्त श्रद्धापूर्वक श्री अन्नपूर्णा व्रत कथा का पाठ या श्रवण करता है, माता अन्नपूर्णा उसकी सभी उचित मनोकामनाएँ पूर्ण करती हैं। उसके घर में अन्न, धन, वैभव, सुख, सौभाग्य और शांति का वास होता है। भगवान शिव और माता अन्नपूर्णा की कृपा से परिवार में सदैव मंगल बना रहता है।

॥ बोलिए श्री अन्नपूर्णा माता की जय ॥

॥ हर-हर महादेव ॥